International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 15-09-2020; Accepted: 30-09-2020; Published: 16-10-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 107-108

टीपू सुल्तान का मूल्यांकन

श्याम कुमार
इतिहास, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

प्रस्तावना

तत्कालीन और आधुनिक इतिहासकारों में टीपू के चरित्र के विषय में विरोधीमत प्रकट किया है। इतिहासकारों का मानना है कि वह कठोर, अत्याचारी और धर्मान्ध शासक था। उसे अपनी योग्यता पर काफी घमण्ड था। टीपू सुल्तान चिकित्साशास्त्र सैन्य व्यवस्था, व्यापार आदि पर अपना मत व्यक्त करता था।

टीपू 1782 में अपने पिता हैदरअली की मृत्यु के बाद मैसूर की गद्दी पर बैठा। राजनीतिक दूर्शता में वह अपने पिता हैदर के समकक्ष ही ठहरता था।

टीपू सुल्तान ने खुतवा मुगलबादशाह के नाम से नहीं बल्कि अपने नाम से पढ़वाना आरंभ किया। टीपू स्थानों और नियमों को भी बदला। कुछ इतिहासकार का मानना था कि टीपू को मनुष्य के चरित्र का ज्ञान न था। वह उनके बारे में निर्णय नहीं ले पाता था।

श्कर्नल विल्कस ने टीपू के बारे में लिखा – हैदर चरित्र के मूल्यांकन में कभी ही भूल करता था। जबकि टीपू कभी ही ठीक होता थाश।

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि टीपू अत्याचारी था। उसने अपने समय में अपने विरोधियों को कठोर यातनाएँ दी। टीपू धर्मान्ध था। ऐसा भी कुछ इतिहासकारों का मानना है कि क्योंकि हिन्दुओं के प्रति उसका व्यवहार कठोर था। जैसे उसने कुर्ग के हिन्दुओं को धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य किया था। इस कारण हिन्दु प्रजा उससे असंतुष्ट थी। परन्तु तस्वीर का यह पहला पक्ष है। तस्वीर का दूसरा पक्ष है कि टीपू श्रृंगेरी के जगदगुरु शंकराचार्य के सम्मान में मंदिरों के पुननिर्माण हेतु घन दान दिया था और शारदा देवी के प्रतिष्ठाान के लिए राज्य की ओर से धन दिया था।

कुछ इतिहासकार का मानना है कि टीपू में राजनीतिक दूरदर्शिता की कमी थी इसी कारण अपने पड़ोसी राज्यों से सहायता प्राप्त करने के स्थान पर उसने दूरस्थ फ्रांस और अन्य मुस्लिम राज्यों से सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न किया। अपने इन्हीं त्रृटियों के कारण टीपू ने अपना राज्य खो दिया। इसके बारे में कहा गया श हैदरअली एक साम्राज्य का निर्माण करने के लिए पैदा हुआ था और टीपू उसे खोने के लिएश।

परन्तु इतिहासकारों के उपर्युक्त कथन को सत्य पूर्णतः नहीं स्वीकार किया जा सकता। कुछ इतिहासकार टीपू के चरित्र और कार्यों के प्रति भिन्न विचार रखते हैं। टीपू शिक्षित था उसे फारसी और कन्नड़ भाषाओं का ज्ञान था। इसने नवीन प्रयोग के अंतर्गत नई मुद्रा, नई माप–तौल की ईकाई और नवीन संवत का प्रचलन करवाया। टीपू ने अपने पिता हैदरअली के विपरीत था। जिसने सार्वजनिक रुप से शाही उपाधि धारण नहीं की। खुलेयाम सुल्तान की उपाधि धारण की तथा 1787 में अपने नाम से सिक्के जारी करवाया। टीपू द्वारा जारी सिक्कों पर हिन्दु देवी–देवताओं के चित्र तथा हिन्दु संवत् की आकृतियाँ अंकित थी। टीपू ने वर्षों तथा महीनों के नाम से अरबी भाषा का प्रयोग किया।

टीपू को राजनीति में रुचि थी। वह विदेशी राज्यों से व्यवहार करने में कुशल था। उसने विभिन्न देशों में अपने राजदूत भेज कर उनसे संपर्क स्थापित करने का प्रयत्न किया था। मराठा और निजाम से सहायता न मिलने तथा अंग्रेजों से शत्रुता होने से उसका स्वयं का काम और इतिहास की घटनाओं एवं परिस्थितियों का दोष अधिक था। उसने निजाम और मराठो की मित्रता हो जाने के प्श्चात् एवं मुगल बादशाह को सिन्धिया के प्रभाव में समझकर ही 1786 ई0 में खुतबा अपने नाम से पढ़वाया था तथा निजाम से मित्रता और विवाह संबंध का भी प्रस्ताव किया था जो निजाम के द्वारा ठुकरा दिया गया था। टीपू साहसी सेनापति था। तृतीय मैसूर युद्ध में बुरी तरह से दुर्बल हो जाने पर भी उसने साहस नहीं छोड़ा था और अपनी पराजय को स्थायी मानने के बजाय तुरन्त ही अपनी शक्ति को पुनः एकत्रित करना आरंभ कर दिया। टीपू कहा करता था– श गिदर की तरह सौ दिन जीने से अच्छा है शेर की तरह एक दिन जीनाश। भारतीय शासकों में वह अकेला शासक था जिसने बिना किसी समझौते के अंग्रेज के विरुद्ध निरंतर संघर्ष किया।

श्सर जॉन शोर ने लिखा– टीपू के राज्य में किसानों की रक्षा की जाती थी। किसानों को प्रोत्साहन एवं इनाम दिया जाता था। टीपू ने सेना, व्यापार, मुद्रा, त्रृण–व्यवस्था , नाप–तौल के साधनों आदि शासन के विभिन्न क्षेत्रों में सुधार किये थे। इसके भी प्रमाण प्राप्त होता है। मालाबार– क्षेत्र में सार्वजनिक सड़कों का निर्माण टीपू ने ही आरंभ करवाया था।

4 मई 1799 ई0 को टीपू ने संयुक्त अंग्रेजी सेना से बहादुरी के साथ लड़ता हुआ मारा गया। इस तरह मैसूर की स्वतंत्रता का इतिहास उसके द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष के गौरवशाली अध्याय का समापन हो गया।

अतः स्पष्ट होता है कि यद्यपि टीपू एक निरंकुश शासक था परन्तु उसने अपनी प्रजा की भलाई के लिए अनेक कार्य किये थे।

संदर्भ सूची

1. एन0 के0 सिन्हाः– हैदरअली
2. सी0 के0 करीमः– केरला अन्डर हैदरअली एण्ड टीपू सुलतान
3. मोहिबुल हसनः– हिस्ट्री ऑफ टीपू सुल्तान
4. सुब्बाराय गुप्ताः– न्यू लाईट ऑफ टीपू सुल्तान